वर्तमान को जीना ही 'धर्म'

एक युवक को किसी ने कहा कि, थोड़ा समय ज्ञान-ध्यान भी कर लिया करो। तो वो कहता है कि ये कार्य तो वृद्धावस्था में करने का है। धर्म का काम तो होता रहेगा। अभी तो है मौज-मस्ती करने का वक्त। वास्तव में देखा जाए तो धर्म का सम्बन्ध न तो अतीत से है और ना ही भविष्य से। धर्म है: 'अभी और यहीं जीना। बस अभी और यहीं।' इस क्षण के पार कुछ भी नहीं है। इस क्षण से हटे कि धर्म से चूके। बाल भर का फासला पड़ा इस क्षण से, कि ज़मीन आसमान अलग-अलग हो गये।

ये क्षण द्वार है प्रभु का। क्योंकि वर्तमान के अतिरिक्त और किसी की कोई सत्ता नहीं है। अतीत है मात्र स्मृतियों का जाल। और भविष्य है केवल कल्पनाओं की, सपनों की बुनावट। इन दोनों का अस्तित्व शून्य है। और इन दोनों में जो जीता है, उसका नाम संसारी है। वही भटका है। ध्यान रहे, जिसको आपने संसार समझा है, वह संसार नहीं है। घर-द्वार, पति-बच्चे, बाज़ार-दुकान- यह सब संसार नहीं है, इसको संसार नहीं कहते। इसको तो छोड़ देना बड़ा आसान है। इसको तो बहुत लोग छोड़कर भाग गये। मगर सवाल ये है कि क्या संसार उनसे छूटा? बैठ जाओ गुफा में हिमालय की, फिर भी संसार तुम्हारे साथ होगा। क्योंकि संसार तुम्हारे मन में है, और मन है अतीत और भविष्य का जोड़। जहाँ वर्तमान है, वहाँ मन नहीं।

- ब्र.कु. गंगाधर

बैठकर भी गुफाओं में क्या करोगे हिमालय की? वह अतीत की उधेड़बुन ही होगी। वही बीती बातें याद आयेंगी। वही बिसरे, विस्मृत हुए क्षण लौट-लौट द्वार खटखटायेंगे। क्या करोगे हिमालय की गुफाओं में बैठकर? फिर भविष्य को संजोओगे। फिर आगे की योजना बनाओगे। अक्सर तो यूं होता है कि जो बाज़ार में बैठा है, उसका भविष्य बहुत बड़ा नहीं होता, क्योंकि वह उस जीवन के पार की कल्पना भी नहीं कर पाता। उसकी कल्पना बहुत प्रगाढ़ नहीं होती। और वह जो हिमालय की गुफाओं में बैठा है, उसे तो कुछ और काम-धाम नहीं, सारी ऊर्जा उपलब्ध है, तो करे तो क्या करे! तो मृत्यु के बाद भी जीवन की कल्पना करता है। स्वर्ग के स्वप्न देखता है। स्वर्ग में भोग की कामनायें करता है। स्वर्ग में शराब के चश्मे बहाता है। स्वर्ग में अप्सराओं को अपने चारो तरफ नचाता देखता है।

यह आपने अजीब बात देखी? चूंकि सारे शास्त्र पुरुषों ने लिखे और ये सारे शमशानी वैरागी रहे होंगे। पुरुष ऐसा लगता है कि ऊपर-ऊपर से बहादुर है, लेकिन भीतर-भीतर बहुत कायर है। बाहर-बाहर की अकड़। चूंकि ये सारे स्वर्ग की योजनाएं व कल्पनाएं पुरुषों ने की, इसमें उन्होंने पुरुषों के भोग का तो इंतज़ाम किया है, लेकिन स्त्रियों के भोग का कोई इंतज़ाम नहीं किया है। सुंदरता को जीवन में अपनाने का तो इंतज़ाम किया है, लेकिन सुंदर युवकों का कोई इंतज़ाम नहीं किया। हाँ, ज़रूर कुछ धर्मों ने सुंदर युवकों का इंतज़ाम किया है, लेकिन वह भी स्त्रियों के लिए नहीं, वह भी पुरुषों के लिए।

सच तो यह है कि बहुत देशों में यह धारणा रही है कि स्त्री में कोई आत्मा नहीं होती। जब आत्मा ही नहीं तो कैसा स्वर्ग! फिर स्त्रियों के लिए इंतज़ाम भी क्यों करते, जब आत्मा ही नहीं है! इसलिए बहुत से धर्मों में स्त्रियों को मंदिर में प्रवेश का अधिकार ही नहीं है, फिर स्वर्ग में प्रवेश का क्या अधिकार होगा! और मोक्ष का तो सवाल ही नहीं उठता! साधु-संत भी समझते रहे हैं कि स्त्री नर्क का द्वार है। यदि स्त्री नर्क का द्वार है तो ये उर्वसी और मेनका स्वर्ग में कैसे पहुँच गईं! और वे ये भी भूल जाते हैं कि आपने भी उसी स्त्री के गर्भ से ही तो जन्म लिया है। अगर वे नहीं होतीं तो क्या आप कहीं होते?

जब प्रभु की स्मृति आ जाये। याद पड़े जब नाम! जब उसकी याद से दिल नाच उठे, डोल उठे। जैसे हवा का झोंका आये, या बेवजह मरीज को करार आ जाये। जैसे अचानक वसंत आ जाये, फूल खिल जायें। ऐसे जिस घड़ी तुम्हारी चेतना में स्वरूप का स्मरण आता है, अपने भीतर छिपे हुए, अपने भीतर विराजे हुए अंतर्चेतना के स्वमान की स्मृति उठती है, स्व का एहसास होता है, सुरति उठती है, ध्यान का जिस क्षण जन्म होता है! ध्यान वही शुभ घड़ी, सुरति का अपूर्व अवसर, वही सबकुछ है। वही लगन, वह मूरत, लेकिन वह परम अवसर केवल वर्तमान में ही घटित होता है, ना कि आने वाले कल में। अभी हो सकता है। अभी, या कभी नहीं। बस हम आपको यही कहना चाहते हैं कि जीवन तो वर्तमान पल है, उसको जी लेना, उसको प्रभु अर्थ जीना ही जीवन है और यही तो धर्म है। क्योंकि परमात्मा ने आपको जीने के लिए भेजा, ना कि जिसका कोई अस्तित्व ही न हो, उसकी उधेड़बुन में - शेष पेज 11 पर

सबसे बड़ी भूल....किसी की भूल को अंतरमन में रखना

बाबा रोज़ इतनी अच्छी नई बात सुनाता रहता है, जो सारा दिन बार-बार वह बात याद आती है। बाबा ने सुनाया कि किसी की खामी (कमी, कमज़ोरी) नहीं देखो, खामी देखना, यह बड़ी खामी है क्योंकि संगम का समय है, घर जाने की तैयारी कर रहे हैं। नाटक में हरेक का पार्ट अपना-अपना है पर मेरा पार्ट क्या है। तो अपने पार्ट को देख मूँझो नहीं, पूछो नहीं। हरेक के पार्ट की अगर खूबी (विशेषता) दिखाई पड़ रही है ना, तो कहेंगे बहुत अच्छा है। अगर खामी दिखाई पड़ रही है तो कहेंगे कि यह अच्छा नहीं है। इसकी यह खूबी वंडरफुल है, भले वो खूबी मेरे में नहीं है, लेकिन मैं कोई निराश नहीं हूँ, बाबा मेरा साथी है, बाबा के संग रहने से साक्षी होके देखना, प्ले करना बहुत अच्छा लगता है।

जैसे बच्चा दिन-रात माँ-बाप के संग में रहता है तो उसके संस्कार भी वैसे बन जाते हैं। तो साक्षी और साथी दोनों का बल मिलता है। साक्षी हैं तो संगठन की शक्ति का स्नेह मिलता है। फिर बाबा के साथ का बल निराकारी और अव्यक्त स्थिति का अनुभव करा देता है। बाबा ने कैसे अपनी अव्यक्त स्थिति बनाते सम्पूर्ण स्थिति धारण कर ली। तो जी चाहता है ऐसा ही हम सब भी मिलकर पुरुषार्थ करें और उस सम्पूर्ण सम्पन्न अवस्था को प्राप्त कर लें। अभी-अभी यहाँ हैं, अभी-अभी वतन में हैं। यहाँ निमित्त मात्र हैं, सेवा अर्थ हैं, यह सेवा का चांस फिर नहीं मिलेगा।

दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

तो हमेशा मैं स्वयं को समझाती हूँ कि यह वक्त जा रहा है... फिर से नहीं आयेगा। अभी जो आपस में एक दो का सहयोग है, आपस में स्नेह, प्रीत है। यह फिर नहीं होगा इसलिए यह अभ्यास अंदर से पक्का हो, भले मैं अकेली बैठी हूँ या 10 के साथ बैठी हूँ, पर दृष्टि में हम आत्मायें भाई-भाई हैं। तो मैं सोचती हूँ, यह पुरुषार्थ देवतायें थोड़े ही करेंगे, सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग कोई भी युग में पुरुषार्थ नहीं है। पर पुरुषार्थ करने का अभी जो समय है, इसमें बहुत फायदा है। हम आपस में ऐसे मिल करके बैठते हैं, योग करते हैं, रूहरिहान करते हैं या अकेले हैं, खाना खा रहे हैं, पर खाते भी बाबा अच्छा याद आ सकता है। याद अंदर की बात है, खाना मुख द्वारा खा रहे हैं, याद अंदर कर रहे हैं, यह अभ्यास संगम पर जो करते हैं वो बहुत सुख पाते हैं।

मेरे से भूल हुई या किससे भी हुई उसे फिर से सोचे नहीं, बोलें नहीं, देखो भी नहीं क्योंकि देखते हैं तब तो कहते हैं कि मैंने देखा ना इसकी यह भूल थी, कितने समय से यह ऐसी भूलें करता आ रहा है..., इसलिए देखो ही नहीं क्योंकि यह सोचना, बोलना, अंदर वृत्ति, दृष्टि में रखना यह सबसे बड़ी भूल है। मानो कल भी किसी ने भूल की तो वह आज याद न आवे। अब क्या करने का है, यह सोचो, तो बहुत फायदा है। भूलने बिगर माफ नहीं कर सकेंगे।

हमें नम्बरवन अर्जुन बनना है

तपस्या का अर्थ है, मन एकाग्रता। शरीर की भी एकाग्रता और मन की भी एकाग्रता। तो मधुबन में सभी ने संगठित रूप से तपस्या की। यहाँ का वायुमण्डल, वायब्रेशन भी सहयोग देता है, क्योंकि यहाँ गेट पर आने से ही वायब्रेशन आते हैं कि हम बाबा के पास जा रहे हैं। तो इस भट्ठी में बाबा ने हम सभी को यह चांस दिया है, तो हम सब आपस में संगठित रूप में ऐसा मन की एकाग्रता का और भिन्न-भिन्न स्थितियों का, बीजरूप वा विदेही अवस्था का अनुभव करें। शरीर के परे की स्थिति माना कोई शरीर से निकलकर कहीं जाना नहीं है, लेकिन मन की एकाग्रता चाहिए। कुछ भी हो, मेरा मन नीचे न आये।

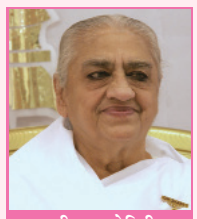
दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

हम सबको अभी कर्मक्षेत्र पर रहते कर्मातीत स्थिति का अनुभव बढ़ाना है। कर्मातीत का अर्थ यह नहीं है कि कर्म से अतीत वा न्यारे हो जायेंगे, इन्द्रियां हैं तो कर्म तो करना ही है। बैठना भी कर्म है, आँख खोलना, याद करना... यह सब कर्म ही तो हैं। यह कर्म तो करना ही नहीं। जैसे पेन कीलर का इंजेक्शन लगने से पेन खत्म हो जाता है। दर्द अपनी तरफ खींचता नहीं है। ऐसे ही कर्मातीत स्थिति अर्थात् कोई भी कर्म के फल स्वरूप जो संस्कार हमारे बने हैं, वो संस्कार और यह संसार अथवा कोई कर्म का बन्धन अपनी तरफ खींचे नहीं - इसको कहते हैं कर्मातीत स्थिति। तो हम सबका लक्ष्य तो यही है।

पाण्डवों में नम्बरवन अर्जुन को दिखाते हैं, उसने विजय प्राप्त की। चाहे मेहनत बहुत ली लेकिन आखिर तो विजयी नम्बरवन बना। तो यह जो संगठन है, निमित्त हैं, तो निमित्त बनने वालों को सदा हर संकल्प पर विजय ज़रूर प्राप्त करनी है, तभी वन नम्बर अर्जुन बन सकते हैं। संस्कार तो हर एक में अपने-अपने हैं। किसके पास दो मुख्य संस्कार होंगे, बाकी बाल-बच्चे होंगे। किसके पास ज़्यादा होंगे। किसके पास कम हो सकते हैं। लेकिन हर प्रकार के कमज़ोर संस्कार को विन करना यही वन नम्बर अर्जुन बनना है।

मन्सा, वाचा, कर्मणा से सन शोज़ फादर

वर्तमान समय हम बच्चों की पढ़ाई मन्सा की है। सूक्ष्म संकल्प, सूक्ष्म दृष्टि व वृत्ति की पढ़ाई है। दृष्टि-वृत्ति इतनी महीन चीज़ है जिसको पवित्र बनाना है। जिससे ही वायुमण्डल बनता है। वाचा और कर्मणा तो मोटी चीज़ है, हमारी कोई मन्त्र पढ़ने व जपने की पढ़ाई नहीं, लेकिन निरन्तर मनमनाभव रहने की पढ़ाई है। अब निरंतर योगी कैसे बनें? सर्व बीमारियों की दवा है-निरन्तर योग। जितना-जितना अपनी स्थिति अशरीरी बनाते जायेंगे, उतना हमें जीवन के सर्व पहलुओं का हल मिल जायेगा।

हम सभी गॉडली स्टूडेन्ट आज यह दृढ़ संकल्प लेंगे कि बाबा मैं आपका फुल कास्ट ब्राह्मण हूँ, योगी हूँ, आप सद्गुरु की श्रीमत पर चलने वाला हूँ। मैं मन्सा-वाचा-कर्मणा सन शोज़ फादर, टीचर, सद्गुरु बनूंगा। हम प्रवृत्ति में बाप का शो करेंगे। जैसे एक गीत है- लेके सहारा बाबा का....तो हमारे साथ उस बाप की शक्ति है। उसी ने हमें सर्व शक्तियों का वरदान दिया है। तो ऐसे बाप के हम मास्टर सर्वशक्तिमान् बच्चे हैं– यह है हमारा पहला-पहला निश्चय। इसी निश्चय के साथ हमें विजय का वरदान है। हम हैं वरदानी बच्चे। वरदाता बाप है, उनसे हमें अनेक वरदान मिले हैं। हम वरदानी बच्चे हैं– यह है हमारा दूसरा निश्चय। हम महादानी, महान् दानी हैं– यह वरदान भी बाबा ने हम बच्चों को दिया है, यह भी हमें बड़ा निश्चय है। चौथा निश्चय है कि हम हैं कल्याणकारी बाप के विश्व कल्याणी बच्चे। जब हमारा कल्याण हो गया है तभी हम दूसरों के कल्याण की सेवा में तत्पर रह सकते हैं। मैं दूसरों के कल्याण में तत्पर रहूँ और मेरा कल्याण हुआ ही नहीं, यह वायदा नहीं है।

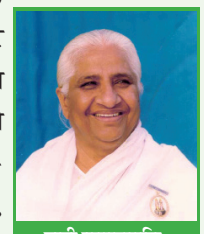
दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका

हम प्यार के सागर से पले हुए प्यारे बच्चे हैं। हम सब बाबा को कहते– बाबा हमने इस बेहद की पुरानी दुनिया का सन्यास किया है, हम सन्यासी हैं, वैरागी हैं। हमें अब नई दुनिया में जाना है। हम देवता थे फिर हमें देवता बनना है, यह भी हमें निश्चय है। सफलता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है, विजय हमारी हुई पड़ी है। भल कितने भी विघ्न पड़ें, लेकिन सफलता हुई पड़ी है– यह भी हमें निश्चय है।

अब सवाल है:-

हम मास्टर सर्वशक्तिमान् हैं, हमें बाबा ने कहा है प्योरिटी इज़ दी रॉयल्टी। हमारा बाबा एवर प्योर है। तो हम इस पहले वरदान में पक्के बाबा के पवित्र बच्चे हैं? यह है पहला पाठ। हम बाबा की ही आकर्षण में सदा रहते हैं? बाबा जैसा सुन्दर दुनिया में और कोई भी है जो मुझे आकर्षित करे? बाबा को ही कहा जाता है सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम। आकर्षित करने वाला सुन्दर मेरा बाबा है, मैं उनकी आकर्षण में हूँ? मुझे कोई देहधारी आकर्षित नहीं कर सकता।